



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 189]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मई 29, 2008/ज्येष्ठ 8, 1930

No. 189]

NEW DELHI, THURSDAY, MAY 29, 2008/JYAISTHA 8, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 29 मई, 2008

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित डिक्लोफेनैक सोडियम के आयात से संबंधित पाटनरोधी जाँच ।

सं. 14/4/2007-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क या अतिरिक्त शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति का निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

क. प्रक्रिया:

I. नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है :—

i. चीन जन. गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित डिक्लोफेनैक सोडियम (जिसे एतदपश्चात् डीएफएस कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जाँच की शुरुआत करते हुए, निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने दिनांक 4 जून, 2007 को जाँच शुरुआत अधिसूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र में विधिवत अधिसूचित किया गया था। घरेलू उद्योग की ओर से मै. कैरव ड्रग्स लि., मै. अमोली ऑर्गेनिक्स प्रा. लि. तथा मै. आरती ड्रग्स लि. (जिन्हें एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है), जो उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन के बड़े हिस्से का उत्पादन करते हैं, से आवेदन प्राप्त होने पर पाटनरोधी प्रक्रिया शुरू की गई थी। आवेदन में संबद्ध देशों से उक्त उत्पाद के पाटन और उसके परिणामस्वरूप वास्तविक क्षति के साक्ष्य शामिल थे जिन्हें इस जाँच की शुरुआत को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त माना गया था।

ii. प्राधिकारी ने नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार जाँच की शुरुआत से पूर्व भारत स्थित चीन के दूतावास को आवेदक से पूर्णतः प्रलेखित आवेदन की प्राप्ति के बारे में सूचित किया।

iii. नियम 6 के उप-नियम (2) के अनुसार प्राधिकारी ने उक्त जाँच शुरुआत अधिसूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उद्योग एसोसिएशनों, संबद्ध देश के दूतावास और आवेदकों को भेजी और उन्हें अपने विचारों से लिखित में अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।

iv. नियम 6 के उप नियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने आवेदन के अगोपनीय अंश की प्रतियाँ संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में चीन के दूतावास को उपलब्ध कराई थीं। नियम 6 के अनुसार प्राधिकारी ने भारत में चीन के दूतावास तथा सभी ज्ञात निर्यातकों को संगत प्रश्नावली की प्रति प्रदान की। नई दिल्ली में चीन के दूतावास को जाँच शुरुआत की सूचना दी गई थी और उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह देने का अनुरोध किया गया था। निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की एक प्रति भी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों के नाम व पत्तों के साथ संबंधित दूतावास को भेजी गई थी।

v. प्राधिकारी ने अपेक्षित सूचना प्राप्त करने के लिए चीन के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियाँ भेजी:-

1. शेंडॉंग यिबाओ बायोलॉजिक्स कं०लि०
जिंगलॉंग इंडस्ट्रियल गार्डन,
जिंगलॉंग जुआंग टाउन,
यांगजू सिटी, शेंडॉंग प्रोविन्स, चीन
2. कम्फर्ट कॉम्स ग्रुप कं० लि०,
26 डी, दुशिहुआयुआन जिंगजू रोड,
फुशियान डिस्ट्रिक्ट, शेंजेन, गुआंगडॉंग, चीन
3. जीबीबी ग्रुप कं०लि०,
डेवलपमेंट जोन, बिज्यू,
शेंडॉंग, चीन
4. हेबेई जिन्हेग (ग्रुप) फार्मास्यूटिकल कं०लि०,
368, जियाँशी स्ट्रीट हेंगशुई सिटी हेबेई,
चीन
5. हेबेई वेयोंग एनिमल फार्मास्यूटिकल कं०लि०,
383-ईस्ट हेपिंग रोड, शिजियाजुआंग सिटी,
हेबेई प्रोविन्स, चीन
6. मेडिको (शिजियाजुआंग) इंडस्ट्रीज एंड ट्रेड कं.लि.
रूम 7जी, ब्लॉक ए, सिटी गार्डन, 159 जिन्हुआ रोड,
शिजियाजुआंग सिटी, हेबेई प्रोविन्स, चीन
7. शेंडॉंग रेयंग फार्मास्यूटिकल कं०लि०
6 एलीगशन रोड, यियुआन काउंटी,

शेंडॉंग प्रोविन्स, चीन

8. शेंडॉंग यिबाओ बायोलॉजिक्स कं० लि०,
जिंगलॉंग इंडस्ट्रियल गार्डन,
जिंगलॉंग जुआंग टाउन, याँजू सिटी,
शेंडॉंग प्रोविन्स, चीन
9. शाँक्सी हेइजेंग साइंटिफिक टेक एंड ट्रेड कं० लि०,
6/एफ, बिल्डिंग 1, 17 लियूलेन, यिंग्जे डिस्ट्रिक्ट,
ताइयुआन सिटी, शाँक्सी प्रोविन्स, चीन
10. स्काइन इंटरनैशनल ग्रुप सनशाइन कॉर्पोरेशन,
50 जोधुआ रोड, नान्जिंग, जियांग्सु, चीन
11. द टीएनएन डेवलपमेंट लि०,
रूम नं० 2901, रेनबो बिल्डिंग, 23 रेन्मिन रोड,
जोंगशान डिस्ट्रिक्ट, डालियान सिटी,
लियोनिंग प्रोविन्स, चीन
12. वुहान लिहुआ इंटरनैशनल टैंड कॉर्पोरेशन,
1205 बी, जियुयुन गार्डन, 34 जियाँधान नॉर्थ रोड,
वुहान सिटी, हुबेई प्रोविन्स, चीन
13. शेंजेन जिजुन फार्मास्यूटिकल कं. लि.,
पता: ब्लॉक 5, बागुआलिंग इंडस्ट्रियल डिस्ट्रिक्ट,
शेंजेन, चीन जन. गण.

vi. केवल एक निर्यातक मै. टैंगयिन याँग्वी ने उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में प्रश्नावली का उत्तर दिया है।

vii. नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना की माँग करते हुए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों एवं प्रयोक्ताओं को भी आयातक प्रश्नावली के साथ जाँच शुरूआत अधिसूचना की प्रति भेजी गई थी।

1. नैटको फार्मा लि०,
नैटको हाउस,
रोड नं. 2, बंजारा हिल्स, हैदराबाद - 500033
दूरभाष: + 91-40-23547532
फैक्स: + 91-40-23548243, + 91-40-23545298
ई-मेल: natinfo@natcopharma.co.in
2. यूनीबायोस लैब्स लि०,
5, सी-6, पूनम दर्शन पूनम नगर,
अंधेरी (पू), मुम्बई - 400093
महाराष्ट्र, भारत
3. मार्कसन्स फार्मा लि०,
कॉर्पोरेट हाउस, 601-622, छठातल,
चिंतामणि प्लाजा, मोहन स्टूडियो कम्पाउण्ड,
अंधेरी - कुर्ला रोड, अंधेरी (पू),
मुम्बई - 400099
दूरभाष: + 91(22)4001-20-00 (30 लाइनें)
फैक्स: + 91(22)6702-10-04
ई-मेल: info@marksanspharma.com
वेब: www.marksanspharma.com

viii. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में किसी भी आयातक या प्रयोक्त ने निर्धारित प्रपत्र एवं पद्धति से प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है ।

ix. प्राधिकारी ने दिनांक 28 जनवरी, 2008 की अधिसूचना सं० 14/4/2007-डीजीएडी के द्वारा प्रारंभिक जाँच परिणाम और उसके बाद दिनांक 12 मार्च, 2008 को उसका शुद्धिपत्र अधिसूचित किया तथा हितबद्ध पक्षकारों से जाँच परिणाम के प्रकाशन की तारीख से 10 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया ।

x. केन्द्र सरकार ने दिनांक 10.04.2008 की अधिसूचना सं० 6/2008 के जरिए अनन्तिम शुल्क अधिरोपित किया ।

xi. हितबद्ध पक्षकारों की मौखिक रूप से सुनवाई करने के लिए प्राधिकारी ने दिनांक 27 मार्च, 2008 को सार्वजनिक सुनवाई की जिसमें केवल घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षों से मौखिक रूप से प्रकट किए गए विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने इस जाँच परिणाम में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा लिखित में प्रस्तुत विचारों पर विचार किया है। पक्षकारों को अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विचारों पर खण्डनात्मक अभ्यावेदन प्रस्तुत करने की स्वतंत्रता दी गई थी।

xii. प्रारंभिक जाँच परिणामों से पूर्व केवल एक निर्यातक मै0 टैंगयिन योंग्वी (घरेलू उद्योग को छोड़कर) द्वारा तर्क या अभ्यावेदन प्रस्तुत किए गए थे। तथापि, प्रारंभिक जाँच परिणामों के बाद उठाए गए और घरेलू उद्योग द्वारा रखे गए तर्कों पर इस जाँच परिणाम को अंतिम रूप देते समय विचार किया गया है।

xiii. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश उसके द्वारा रखी गयी सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।

xiv. *** से इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का पता चलता है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

xv. नियमावली के नियम 16 के अनुसार, इन जाँच परिणामों के लिए विचार किए गए आवश्यक तथ्यों और निर्धारण ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष प्रकट किया गया था और उस पर कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई है।

xvi. पाटन की जाँच में 1 जनवरी, 2004 से 31 दिसम्बर, 2006 तक की अवधि (जिसे जाँच अवधि या पीओआई भी कहा गया है) शामिल थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्ति की जाँच में 1 अप्रैल, 2003 से जाँच अवधि के अंत तक की अवधि (जिसे क्षति अवधि में कहा गया है) शामिल थी।

xvii. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग का मौके पर सत्यापन किया। घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना और सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर उत्पादन की ईष्टतम लागत तथा भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का भी विश्लेषण किया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग को हुई क्षति की समाप्ति के लिए पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।

xviii. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एण्ड एस) से भी अनुरोध किया गया कि वह जाँच की अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे प्रस्तुत करें।

xix. जहाँ कहीं किसी हितबद्ध पक्षकार ने आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है या वर्तमान जाँच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना प्रदान नहीं की है अथवा जाँच में अत्यधिक बाधा डाली है, प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर इन जाँच परिणामों को दर्ज किया है।

ख. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

ख.1 घरेलू उद्योग के विचार

2. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए हैं :-

- i. डिक्लोफेनैक सोडियम दूसरे रसायनों के ही समान सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के उप-शीर्ष 29420090 के तहत वर्गीकृत एक कार्बनिक रसायन है।
- ii. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा चीन जन.गण. से आयातित डीएफएस समान वस्तुएँ हैं।
- iii. डीएफएस श्वेत या हल्का पीलापन लिए दानेदार पाउडर, प्रकृति में थोड़ा आर्द्रताग्राही और जल में अल्प घुलनशील होता है।
- iv. भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित डिक्लोफेनैक सोडियम और चीन से निर्यातित डीएफएस में कोई अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और चीन से आयातित डिक्लोफेनैक सोडियम भौतिक और रसायनिक विशेषताओं जैसी विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं।
- v. डीएफएस एक गैर-स्टेरायडल जलनरोधी औषधि (एनएसएआईडी) है जिसे जलन घटाने के लिए लिया जाता है और यह एक दर्दनिवारक है जो गठिया या गंभीर नोट जैसी स्थितियों में दर्द को कम करता है।
- vi. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित डीएफएस में कोई अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित डीएफएस भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी (विश्वभर में अधिकांश उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त), कार्य एवं प्रयोग, उत्पादन विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ताओं ने इनका प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर किया है। याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित और चीन से आयातित डीएफएस समान वस्तुएँ हैं।

ख.2 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार

3. आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों में से किसी ने भी विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में कोई टिप्पणी या अनुरोध प्रस्तुत नहीं किया है।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

4. विचाराधीन उत्पाद चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित डिक्लोफेनाक सोडियम है। डीएफएस एक मूलभूत कार्बनिक रसायन है जिसे सामान्यतः सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। डीएफएस एक गैर-स्टेरायडल जलनरोधी औषधि (एनएसएआईडी) है जिसे जलन कम करने हेतु लिया जाता है और एक दर्द निवारक है जिसे गठिया या गंभीर चोट जैसी स्थिति में दर्द कम करने के लिए लिया जाता है। यह उत्पाद भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अनुसार सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष सं० 2942.0090 के अंतर्गत वर्गीकृत है। तथापि सीमाशुल्क एवं आईटीसीएस वर्गीकरण मात्र सांकेतिक हैं और वर्तमान जाँच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

5. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु का अर्थ ऐसी कोई वस्तु है जो विचाराधीन उत्पाद से सभी प्रकार से समान और उसके जैसी हो या ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में अन्य कोई वस्तु जिसमें जाँचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हों।

6. याचिकाकर्ताओं का दावा है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुएँ चीन के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित वस्तुओं की समान वस्तु हैं। किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने इस मुद्दे पर घरेलू उद्योग के दावे पर कोई आपत्ति नहीं की है। अतः उपर्युक्त के मदेनजर प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित डीएफएस और चीन से आयात की जा रही वस्तु नियमों के अर्थ के भीतर समान वस्तु हैं।

ग. घरेलू उद्योग

ग.1 घरेलू उद्योग के विचार

7. घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए थे।

- i. यह याचिका मै० कैरव कैमिकल्स लि०, मै० अमोली आर्गेनिक्स प्रा० लि० और मै० आरती ड्रग्स लि० द्वारा संयुक्त रूप से दायर की गई थी। भारत में डीएफएस को एक और उत्पादक मै० मेडिटेक कैमिकल्स लि० है। मै० मेडिटेक कैमिकल्स ने याचिका का समर्थन किया है। अतः याचिकाकर्ता नियमावली 1995 के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग हैं।
- ii. याचिकाकर्ताओं के उत्पादन का भारतीय उत्पादन में प्रमुख हिस्सा बनता है और इसलिए नियमों के अर्थ के भीतर याचिकाकर्ताओं को घरेलू उद्योग माना गया है।

ग.2 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकों के विचार

8. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन में संबद्ध वस्तु के केवल एक उत्पादक मै० टांगयिन योंगकी ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर दिया है।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

9. प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा किए गए अनुरोधों की जाँच की है।

10. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक का उत्तर पढ़ते समय उन्होंने यह नोटिस किया कि मै० हेनान डोंगताई फार्मा कं०लि० जो मै० टैंगनियन योंगकी की एक संबंधित कम्पनी है लेकिन एक पृथक विधिक सत्ता है ने अलग से उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि मै० हेनान ने प्राधिकारी के आदेश पर एमईटी प्रश्नावली का उत्तर दिया है। इस संबंध में प्राधिकारी मानते हैं कि मै० हेनान डोंगताई फार्मा कं०लि० का उत्तर स्वीकृत नहीं था।

घ. अन्य मुद्दे

11. चीन से संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित आकड़ों के विभिन्न अलग-अलग स्रोतों पर उपलब्ध सूचना से आयातों की मात्रा प्रदर्शित नहीं होती है। तथापि प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ आईबीआईएस और डीजीसीआई एण्ड एस में उपलब्ध आँकड़ों पर विचार किया है।

घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

12. प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ताओं ने अनुरोध किया है कि प्रारंभिक जाँच परिणामों में आयातों की वास्तविक मात्रा आईबीआईएस के अनुसार बताई गई मात्रा के रूप में दर्शाई गई है। तथापि सार्वजनिक सुनवाई के बाद के अपने अनुरोधों में याचिकाकर्ताओं द्वारा डीजीसीआई एण्ड एस और आईबीआईएस द्वारा प्रदत्त आयात आँकड़ों के प्रत्येक सौदे का विश्लेषण किए जाने की जानकारी दी गई है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि दोनों स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों की तुलना करने पर यह पाया गया था कि डीजीसीआई एण्ड एस के सौदावार आँकड़ों में ऐसी कतिपय प्रविष्टियाँ हैं जो आईबीआईएस के आँकड़ों में नहीं दर्शाई गई हैं। याचिकाकर्ताओं ने निम्नलिखित ब्यौरों के अनुसार अंतिम जाँच परिणामों के प्रयोजनार्थ इन अतिरिक्त आयात मात्राओं में आयात संबंधी सूचना को रिकार्ड में शामिल करने का अनुरोध किया है। प्राधिकारी ने इस संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोधों को स्वीकार करते हुए क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ आईबीआईएस और डीजीसीआई एण्ड एस के आँकड़ों के स्रोतों में उपलब्ध आँकड़ों पर विचार किया है।

वर्ष	के अनुसार मी. टन में आयात मात्राएं		
	डीजीसीआईएस	आईबीआईएस	समेकित
2003-04	5.00	29.35	29.35
2004-05	11.00	51.00	51.00
2005-06	28.50	51.83	58.88
जाँच अवधि	89.75	110.79	134.84

ड. सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत

ड.1 चीन जन.गण.

ड.1.1 चीन जन.गण. हेतु सामान्य मूल्य

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि केवल एक निर्यातक मै0 टैग्यिन यांगकी ने जाँच शुरूआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर दिया है और सूचना प्रस्तुत की है। तथापि निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना उक्त चीनी उत्पादक हेतु बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान करने संबंधी दावे के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी द्वारा अधूरी और असंतोषजनक पाई गई है। प्राधिकारी ने पाया कि प्रतिवादी उत्पादक से प्राप्त उत्तर में कम्पनी की स्थापना की मूल तारीख, क्या उसे पहले से मौजूद किसी उद्यम से रूपांतरित किया गया था, निवेश, वित्त का स्रोत और अन्य संबंधित व्यौरों के संबंध में अनेक कमियाँ हैं, जिनसे प्राधिकारी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समुचित उत्तर नहीं मिल पाया है। इसके अलावा प्राधिकारी नोट करते हैं कि इन कमियों की प्रतिवादी निर्यातक के सत्यापन की प्रक्रिया के दौरान जाँच करना प्रस्तावित था, जिन्हें वस्तुतः संबद्ध निर्यातक द्वारा सहमति वापस लिए जाने के कारण किया नहीं जा सकता था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कथित सहयोगी निर्यातक ने एक समय एक सहमति पत्र दिया था जिसमें प्राधिकारी द्वारा मौके पर जाँच करवाने की उनकी इच्छा दर्शाई गई थी। तथापि उन्होंने अंतिम समय में सहमति वापस ले ली और भारत में उनके कानूनी प्रतिनिधि मै0 दुआ एसोसिएट्स द्वारा प्राधिकारी द्वारा सत्यापन करवाने में उक्त प्रतिवादी निर्यातक की असमर्थता के बारे में एक पत्र भेजा गया था और उस सीमा तक प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक शुल्क निर्धारण हेतु प्रदत्त गैर-बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार का कोई खण्डन नहीं किया गया था। इसके अलावा प्राधिकारी एमईटी के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध उत्पादक को असहयोगी निर्यातक मानते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संबद्ध निर्यातक अन्य सभी असहयोगी निर्यातकों के साथ गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की स्थितियों के अंतर्गत प्रचालन कर रहा है। प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों पर भरोसा किया है।

प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। सामान्य मूल्य का निर्धारण निर्यातक, जिसने पहले सहयोग किया और जांच शुरुआत की अधिसूचना का उत्तर दिया, की कच्ची सामग्रियों की वास्तविक खपत पर विचार करते हुए और सर्वाधिक सक्षम याचिकाकर्ता कंपनी की उत्पादन लागत के आधार पर किया गया है। इस पद्धति को अपनाकर डीएफएस के लिए प्राधिकारी द्वारा यथापरिकलित सामान्य मूल्य की गणना *** अम. डा. प्रति कि.ग्रा. के रूप में की गई है।

ड.1.2 निर्यात कीमत

14. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रारंभिक निर्धारण हेतु चीन की प्रतिवादी कंपनी के मामले में निर्यात कीमत प्रतिवादी निर्यातक/उत्पादक मै. टैंग्यिन योंगकी द्वारा किए गए दावों के आधार पर अपनाई गई है। प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ अंतर्देशीय भाड़े, कमीशन, बैंक प्रभारों और सीआईएफ सौदों पर पैकेजिंग व्ययों तथा एफओबी सौदे के संबंध में बैंक प्रभारों संबंधी दावा किए गए कीमत समायोजनों की अनुमति दी गई थी। तथापि सत्यापन की सहमति वापस लेने के कारण प्रतिवादी निर्यातक के रिकार्डों के सत्यापन में प्राधिकारी की असमर्थता की वजह से प्राधिकारी संबद्ध प्रतिवादी निर्यातक को असहयोगी निर्यातक मानते हैं और चीन के सभी निर्यातकों के लिए केवल एक निर्धारण कीमत का निर्धारण करते हैं। प्राधिकारी ने मै. टैंग्यिन योंगकी द्वारा भारत को किए गए निर्यातों के संबंध में उनके द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार, सीआईएफ के अनुरूप सौदों के न्यूनतम स्तर के आधार पर और अंतर्देशीय भाड़े, कमीशन, बैंक प्रभार और एफओबी सौदों पर पैकेजिंग खर्चों तथा चीन की सरकार द्वारा अनुमत 4% वैट वापसी के लिए आवश्यक समायोजन करने के बाद निवल निर्यात कीमत निर्धारित की है। उपर्युक्त पद्धति अपनाकर कारखाना द्वार निर्यात कीमत की गणना *** अम. डा. प्रति कि.ग्रा. के रूप में की गई है।

च. पाटन मार्जिन

15. ऊपर यथानिर्धारित सामान्य मूल्यों और निर्यात कीमतों के आधार पर, चीन जन. गण. से सभी निर्यातकों के लिए प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन के ब्यौरे निम्नांकित तालिका में दिया गया है।

अम. डा. (पीएमटी में)

चीन जन. गण. के निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य (अम. डा.)	निर्यात कीमत (अम. डा.)	पाटन मार्जिन (अम. डा.)	परिवर्तन दर	पाटन मार्जिन (भा. रू.)	पाटन मार्जिन (%)
चीन से सभी निर्यातक	***	***	***	1 अम. डालर = 45.67 रू.	***	70-75%

16. इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक है और निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।

छ. क्षति निर्धारण और कारणात्मक संबंध की जांच

छ.1 घरेलू उद्योग के विचार

17. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं :-

क) उत्पादन पर पहले पाटनरोधी शुल्क लागू था और इसलिए वर्ष 2003-04 से 2005-06 तक घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण के कारण हुआ है। तथापि, कार्य निष्पादन में जांच अवधि में वास्तविक रूप से विकृति आई है।

ख) संबद्ध देशों से निर्यात कीमत जांच अवधि के दौरान पाटित स्तर पर रही है। इसके अलावा, इन कीमतों में आधार अवधि से जांच अवधि तक निविष्टियों की कीमतों में हुई वृद्धि के अनुपात में वृद्धि नहीं हुई है।

(ग) घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री मात्राओं और क्षमता उपयोग में माँग में वृद्धि की प्रतिक्रियास्वरूप सुधार प्रदर्शित हुआ है। तथापि, जांच अवधि में यह वृद्धि आयातों में वृद्धि के परिणामस्वरूप कम रही है।

(घ) घरेलू उद्योग के लाभ/हानि (पीबीटी, पीबीआईटी और पीबीडीआईटी) सभी में पाटनरोधी शुल्क के लागू रहने के परिणामस्वरूप 2005-06 तक सुधार प्रदर्शित हुआ है। तथापि आयातों की पाटित मात्रा में भारी वृद्धि के कारण जांच अवधि में लाभ में गिरावट आई है।

(ङ) घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। यह इस तथ्य के कारण है कि पाटित आयातों ने भारत में माँग के काफी बड़े बाजार हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

(च) संबद्ध देश से आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती की गई है।

(छ) संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वर्ष 2005-06 और प्रस्तावित जांच अवधि के दौरान कीमतों को तेजी से घटाने पर मजबूर होना पड़ा है। इस प्रकार आयात इस अवधि में कीमतों में कमी कर रहे थे।

(ज) घरेलू उद्योग के रोजगार स्तरों में जांच अवधि में गिरावट आई है।

(झ) वेतन एवं मजदूरी :- घरेलू उद्योग के वेतन एवं मजदूरी में सामान्य वृद्धि हुई है।

(ञ) माँग और बाजार हिस्सा : यद्यपि आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है तथापि घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी आई है।

(ट) संवृद्धि :- घरेलू उद्योग की संवृद्धि में अनेक मापदंडों की दृष्टि से ऋणात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

(ठ) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है और वह मात्रात्मक प्रभाव और कीमत प्रभाव के दुश्चक्र में फँस गया है। विदेशी उत्पादकों की बेशी क्षमता के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में चीन से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग को बिक्री और बाजार हिस्से में नुकसान हुआ है। इसके परिणामस्वरूप प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव पड़ा है। बिक्री में नुकसान के कारण घरेलू उद्योग को घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री करने की दृष्टि से अपनी घरेलू बिक्री कीमत में कमी करने के लिए मजबूर होना पड़ा है और इसके परिणामस्वरूप प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ा है। निर्यातकों ने अपनी बिक्री कीमत में और कटौती की है और इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतें और घटाई है और यह प्रक्रिया जारी रही है। परिणामस्वरूप निर्यातक देशों की अनुचित व्यापार प्रथाओं के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव और प्रतिकूल कीमत प्रभाव का सामना करना पड़ा है।

(ड) संबद्ध देशों से आयात उस वास्तविक क्षति को बढ़ा रहे हैं जिसका घरेलू उद्योग पहले से सामना कर रहा है।

(ढ) आयात की मात्राओं में सापेक्ष रूप से अत्यधिक वृद्धि हुई है। आयातों में यह वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा अपना माल ईष्टतम से कम कीमतों पर बेचने के अथक प्रयासों के बावजूद हुई है। यदि घरेलू उद्योग कम कीमतें लगाकर आयातों को नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करता तो आयातों में हुई वृद्धि कहीं अधिक होती।

(ण) कीमत कटौती बहुत अधिक है। घरेलू उद्योग पर कीमत मंदी का प्रभाव इतना अधिक हुआ है कि यदि घरेलू उद्योग आयातों की पहुंच कीमत के सदृश कीमतों पर उत्पाद को बेचता तो अपनी उत्पादन लागत (बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक व्यय तो दूर की बात है) की वसूली करने में भी असमर्थ रहता।

(त) याचिकाकर्ताओं ने संबद्ध देश से उत्पादकों की क्षमताओं तथा उस देश में मांग का विस्तृत विश्लेषण किया जो स्पष्ट रूप से विदेशी उत्पादकों की बेशी अप्रयुक्त क्षमताओं को दर्शाता है जिसका निपटान भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर किए जाने की संभावना है।

छ.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

छ.2.1 पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर प्रभाव

18. प्राधिकारी ने डीजीसीआई एंड एस से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के सौदे-वार ध्योरे एकत्र किए। प्राधिकारी ने याचिकाकर्ताओं द्वारा गौण स्रोतों से जुटाए गए आयात आंकड़ों की भी जांच की। दोनों स्रोतों से आयातों पर विचार करने के बाद आंकड़ों के अनुसार संबद्ध देश से आयातों में सापेक्ष रूप से तथा भारत में आयातों की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। जाँच अवधि में चीन से आयात देश में कुल आयात का 100% है और कुल भारतीय मांग का 15.33% है।

छ.2.1.1 संबद्ध देशों से आयात की मात्रा तथा उसका हिस्सा

स्रोत: आईडीआईएस तथा डीजीसीआई एंड एस	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि (जन.-दिसंबर, 06)
चीन जन. गण.	मी. टन	29.35	51.00	58.88	134.84
अन्य देश	मी. टन	0	0	0.31	0
कुल आयात	मी. टन	29.35	51.00	59.19	134.84
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	174	202	459

छ.2.1.2 आयातों में बाजार हिस्सा

स्रोत: आईडीआईएस तथा डीजीसीआई एंड एस	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि (जन.-दिसंबर, 06)
आयातों में बाजार हिस्सा					
चीन जन. गण.	%	100	100	99.47	100

प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	99	100
अन्य देश	%	0	0	0.53	0
कुल	%	100	100	100	100
घरेलू उद्योग का उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***
संबद्ध देशों से आयात	मी. टन	29.35	51.00	58.88	134.84
घरेलू उद्योग के उत्पादन के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयात	%	6.07	7.91	6.95	15.22

छ.3 माँग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा

छ.3.1 माँग में वृद्धि

स्रोत: आईबीआईएस तथा डीजीसीआई एंड एस	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जाँच अवधि
घरेलू उद्योग	मी. टन	***	***	***	***
अन्य उत्पादक	मी. टन	***	***	***	***
कुल आयात	मी. टन	29.35	51.00	59.19	134.84
कुल माँग	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	141	157

19. प्राधिकारी द्वारा संबद्ध वस्तु की माँग का निर्धारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री तथा सभी देशों से समग्र आयातों को जोड़कर किया गया है। प्राधिकारी निष्कर्ष देते हैं कि मूल वर्ष अर्थात् 2003-04 से जाँच अवधि तक संबद्ध वस्तुओं की माँग में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

20. प्राधिकारी आगे निष्कर्ष देते हैं कि घरेलू उद्योग के उत्पादन की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि का रुझान दिखाई देता है। मूल वर्ष 2003-04 में संबद्ध देशों से आयात घरेलू उद्योग के उत्पादन की तुलना में केवल 6% था जो जाँच अवधि में बढ़ कर प्रतिशत के रूप में 15% हो गया है।

छ.4 घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जाँच अवधि
संयंत्र क्षमता	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	126	133	138
संयंत्र उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	151	158
संयंत्र क्षमता उपयोग (%)	%	72.54	64.22	82.88	83.02
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	114	114
उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	133	175	183

21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग के आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 2003-04 के दौरान समग्र रूप से समूह हेतु घरेलू उद्योग की क्षमता 1032 मी. टन थी जो मांग में वृद्धि की प्रत्याशा में जांच अवधि के दौरान बढ़कर 1428 मी. टन हो गई थी। वर्ष 2003-04 के दौरान संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन 483 मी. टन था और बढ़ती हुई मांग के मद्देनजर निरंतर बढ़ रहा है। प्रवृत्ति से यह लक्षित होता है कि मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन में 83% की वृद्धि हुई थी।

छ.4.1 घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
घरेलू उद्योग	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	127	143	145

22. बिक्री संबंधी आंकड़ों से लक्षित होता है कि वर्ष 2003-04 के दौरान घरेलू उद्योग ने *** मी. टन संबद्ध वस्तु की बिक्री की और यह जांच अवधि में बढ़कर *** मी. टन हो गई थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बिक्री मूल वर्ष 2003-04 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 45% बढ़ गयी है। आगे यह नोट किया जाता है कि विशेष रूप से जांच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि देश में उत्पाद की मांग में वृद्धि से कम है। अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष देते हैं कि जहाँ एक ओर वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि के बीच मांग में 16 सूचकांक बिंदुओं की वृद्धि हुई वहीं इसी अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री में केवल 2% की वृद्धि हुई थी।

छ.4.2 माँग तथा बाजार हिस्सा

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
घरेलू उद्योग	मी. टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	127	143	145
अन्य उत्पादक	मी. टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	72	128	132
कुल आयात	मी. टन	29.35	51.00	59.19	134.84
सूचीबद्ध		100	174	202	459
कुल माँग	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	112	141	157
माँग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	113	101	92
अन्य उत्पादक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	64	91	84
संबद्ध देश	%	5.25	8.16	7.47	15.33
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	155	142	292
अन्य देशों से आयात	%	-	-	0.04	-

23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जहाँ मूल क्षति अवधि 2003-04 की तुलना में जांच अवधि के दौरान भारत में कुल माँग में 57% की वृद्धि हुई थी वहीं उसी अवधि में चीन जन. गण. से आयातों के बाजार हिस्से में 359% की जबरदस्त वृद्धि हुई थी जबकि घरेलू उद्योग के हिस्से में केवल 45% और घरेलू उत्पादकों के हिस्से में 32% की वृद्धि हुई थी। प्राधिकारी निष्कर्ष देते हैं कि भारत में खपत की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

24. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं की माँग में निरंतर वृद्धि हुई है। मूल वर्ष 2003-04 की तुलना में जांच अवधि में माँग 57% अधिक थी। घरेलू उद्योग का हिस्सा, जो वर्ष 2003-04 में *** % था जांच अवधि के दौरान गिरकर *** % हो गया था। उसी अवधि में संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा, जो वर्ष 2003-04 में 5.25% था, जांच अवधि के दौरान बढ़कर 15.33% हो गया था। अतः प्राधिकारी निष्कर्ष देते हैं कि पाटित आयातों ने माँग के काफी बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है।

छ.5. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

25. नियम 18 के उप नियम (2) में किए गए उल्लेख के अनुसार कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में प्राधिकारी यह विचार करेगा कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में पर्याप्त स्तर तक अन्यथा गिरावट आई है अथवा उसमें होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

26. कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत अवमूल्यन तथा कीमत मंदी, यदि कोई है, के संदर्भ में प्राधिकारी द्वारा संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़े प्रभाव की जांच की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत, निवल बिक्री वसूली (एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देश से आयातों की पहुँच लागत से की गई है।

छ.5.1 जांचाधीन अवधि में कीमत मूल्यांकन

इकाई	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	93	101	102
बिक्री कीमत (एनएसआर)	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	121	119

छ.6. कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव (जांच अवधि)

जांच अवधि	इकाई	जन. 06 से दिस. 06
निवल बिक्री वसूली	रु./कि.ग्रा.	***
पहुँच कीमत-चीन	रु./कि.ग्रा.	***
कीमत कटौती	रु./कि.ग्रा.	***
कीमत कटौती (%)	%	62-67%

क्षति रहित कीमत	रु./कि.ग्रा.	***
कम कीमत पर बिक्री	रु./कि.ग्रा.	***
कम कीमत पर बिक्री (%)	%	65-70%

छ.6.1 हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए गए तर्क

27. प्रतिवादी निर्यातक ने दावा किया है कि उन्होंने भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात लाभ सहित तथा सामान्य मूल्य से अधिक पर किया है और इसलिए याँगकी द्वारा कीमत कटौती का प्रश्न ही नहीं उठता। यह तर्क दिया गया है कि प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष देने के लिए कोई कारण नहीं दिया है कि याँगकी से आयातित संबद्ध उत्पाद अवमूल्यित कीमतों पर बेचा गया है क्योंकि इसे याँगकी के कच्चे माल तथा लागत स्तरों के संदर्भ में देखा जाना है। वे आगे यह तर्क देते हैं कि याँगकी ने कच्चे माल की कीमतों तथा संबद्ध उत्पाद के विनिर्माण में शामिल अन्य लागतों को कम नहीं किया है और भारत को उक्त उत्पाद का निर्यात सामान्य मूल्य से अधिक पर तथा लाभ सहित किया है।

छ.6.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निम्नानुसार पाटन जांच अवधि हेतु कीमत कटौती का निर्धारण अपेक्षित है न कि समूची क्षति अवधि के लिए। तथापि तर्क पर विचार करते हुए प्राधिकारी ने गत वर्षों के साथ-साथ निम्नलिखित ब्यौरे के अनुसार कीमत कटौती का निर्धारण किया है।

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
निवल बिक्री वसूली	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	121	119
पहुंच कीमत-चीन	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती (%)	%	31.24	23.22	9.36	62-67%

29. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की गणना करते समय घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त छूट, डिस्काउंट एवं कमीशन एवं संदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को घटा दिया गया है।

30. कीमत कटौती के निर्धारण में प्राधिकारी द्वारा संबद्ध देश से समस्त क्षति अवधि के दौरान पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य तथा मेसर्स तांगयिन याँगकी द्वारा अपने उत्तर में प्रदर्शित न्यूनतम निर्यात कीमत के आधार पर जांच अवधि हेतु निर्धारित पहुंच मूल्य की तुलना उसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति के साथ की गई। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की गणना मेसर्स तांगयिन याँगकी द्वारा अपने उत्तर में प्रदर्शित न्यूनतम निर्यात कीमत में 1% पहुंच प्रभार तथा लागू मूल उत्पाद शुल्क को जोड़कर की गई है। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से कीमत कटौती 62-67% की सीमा में पाई गई।

31. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ मेसर्स तांगयिन याँगकी द्वारा अपने उत्तर में प्रदर्शित न्यूनतम निर्यात कीमत के आधार पर संबद्ध देश से आयातों हेतु निर्धारित पहुंच कीमतों की तुलना घरेलू उद्योग के लिए जांच अवधि हेतु निर्धारित क्षति रहित कीमत से की गई। यह देखा गया कि कम कीमत पर बिक्री 65-70% की सीमा में हुई।

32. जहां तक मेसर्स तांगयिन योगकी द्वारा प्रस्तुत इस तर्क पर विश्वास नहीं किया जा सकता कि उन्होंने माल की कीमत तथा संबद्ध उत्पाद के विनिर्माण में शामिल अन्य लागत से संबंधित सूचना नहीं छिपाई है और उक्त उत्पाद को निर्यात भारत को इसके सामान्य मूल्य से अधिक मूल्य तथा लाभ पर किया है, क्योंकि उक्त उत्पादक/निर्यातक द्वारा सत्यापन संबंधी सहमति वापस ले लिए जाने के कारण प्राधिकारी मेसर्स तांगयिन योगकी के रिकार्ड का सत्यापन नहीं कर सके।

छ.7 पाटित आयातों पर कीमत ह्रास तथा अवमूल्यन का प्रभाव

33. प्राधिकारी द्वारा पाटित आयातों पर कीमत ह्रास के प्रभाव की जांच भी उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति तथा संबद्ध देशों से पहुंच मूल्य के संदर्भ में की गई है।

34. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों की प्रवृत्ति के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्ष 2003-04 तथा 2004-05 के दौरान बिक्री कीमत में घट-बढ़ के उत्पादन लागत में घट-बढ़ अनुरूप हुई। तथापि जांच अवधि के दौरान यह रुख पलट गया, क्योंकि उत्पादन लागत बढ़ गई और बिक्री कीमत में गिरावट आई। जांच अवधि के दौरान पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में आयातों की पहुंच कीमत में भी गिरावट आई। अतः प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि आयातों का बाजार में प्रचलित कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

छ.8 क्षति से संबंधित अन्य मानदण्डों की जांच

35. पिछले खण्ड में घरेलू उद्योग की मात्रा तथा कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा क्षति से संबंधित प्रमुख सूचकों जैसे आयातों की मात्रा तथा मूल्य, क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग एवं घरेलू उद्योग की बिक्री के साथ-साथ बाजार के विभिन्न खण्डों के बाजार हिस्से के साथ मांग के पैटर्न की जांच के उपरांत प्राधिकारी द्वारा अन्य आर्थिक मानदण्डों की भी जांच की गई जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति के अस्तित्व का संकेत मिलता है, जिसका विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :-

छ.8.1 लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं सम्भावित प्रभाव

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	93	101	102
बिक्री कीमत (एनएसआर)	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	121	119
लाभ/हानि	रु./कि.ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-55	45	18
कर पूर्व लाभ/हानि	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-70	65	27
पीबीआईटी	रु./लाख	***	***	आर.सी. प्र. 1.1	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-71	113	72
नकद लाभ	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	70	-65	-27

36. आंकड़े यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 2% की वृद्धि हुई, जिसकी तुलना में बिक्री कीमत में जांच अवधि के दौरान 19% की बढ़ोतरी हुई। प्रति इकाई नकद लाभ, जो आधार वर्ष तथा 2004-05 में नकारात्मक था, वर्ष 2005-06 में 22% (सूचीबद्ध) के लाभ में परिणत हो गया और आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान इसमें 9% (सूचीबद्ध) की गिरावट आई। घरेलू बिक्री पर घरेलू उद्योग के लाभ (पीबीआईटी) में भी यही प्रवृत्ति देखी गई। अतः प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि यद्यपि 2005-06 तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार हुआ, तथापि प्रति इकाई बिक्री लागत में वृद्धि को इसका कारण माना जा सकता है।

छ.8.2 निवेश से आय तथा पूंजी जुटाने की क्षमता

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
पीबीआईटी	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-71	113	72
निवल अचल परिसंपत्तियाँ	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	172	175	142
कार्यशील पूंजी	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	131	109
नियोजित पूंजी-एनएफए	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	146	157	128
नियोजित पूंजी से आय (एनएफए के आधार पर)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	-48	72	56

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में, नियोजित पूंजी में 2004-05 के दौरान 46%, 2005-06 के दौरान 57% तथा जांच अवधि के दौरान 28% की वृद्धि हुई। नियोजित पूंजी से हुई आय आधार वर्ष तथा 2004-05 के दौरान नकारात्मक थी, जो 2005-06 के दौरान सकारात्मक 72% हो गई और जांच अवधि के दौरान यह घटकर 56% रह गई। इस प्रकार यह देखा गया कि घरेलू उद्योग की स्थिति में जहां 2005-06 के दौरान सुधार हुआ, वहीं जांच अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई।

छ.8.3 उत्पादकता

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	124	164	175

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रति कर्मचारी उत्पादन से संबंधित आंकड़े यह दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादकता में 75% की वृद्धि हुई।

छ.8.4 रोजगार तथा मजदूरी

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
रोजगार (जनशक्ति)	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	107	105
मजदूरी	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	109	123	150

39. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार के स्तर में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं देखा गया है। सूचीबद्ध रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 105% की वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मजदूरी में 50% की वृद्धि हुई।

छ.8.5 माल सूचियाँ

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
आदिशेष स्टॉक	कि. ग्रा.	***	***	***	***
अथशेष स्टॉक	कि. ग्रा.	***	***	***	***
औसत स्टॉक	कि. ग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	149	107	38
बिक्री के दिवसों की संख्या के रूप में औसत स्टॉक	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	131	78	27

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि औसत मालसूची की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि औसत मालसूची आधार वर्ष में 100 से घटकर जांच अवधि में 38 रह गई। प्राधिकारी नोट करते हैं कि स्टॉक, जो 2003-04 में ***** दिनों की बिक्री के समतुल्य था, जांच अवधि के दौरान घटकर **** दिवसों के समतुल्य रह गया।

छ.8.6 वृद्धि

41. मांग में हुई वृद्धि में आधार वर्ष से जांच अवधि तक वर्ष दर वर्ष आधार पर सकारात्मक प्रवृत्ति देखी गई। जांच अवधि के दौरान उत्पादन तथा बिक्री में हुई वृद्धि में सकारात्मक प्रवृत्ति देखी गई। वर्ष 2004-05 में उत्पादन लागत और बिक्री कीमत में गिरावट आई; तत्पश्चात् 2005-06 तथा जांच अवधि में इनमें वृद्धि हुई। लाभ में वृद्धि वर्ष 2005-06 तक सकारात्मक प्रवृत्ति और जांच अवधि के दौरान गिरावट दर्शाती है।

छ.8.7 निवेश

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि बढ़ती हुई मांग को देखते हुए और संबद्ध देशों से पाटित आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के परिणामस्वरूप बिक्री में वृद्धि की प्रत्याशा में घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष से जांच अवधि तक सम्बद्ध वस्तुओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि की है।

छ.8.8 पाटन की सीमा

43. प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को जिस सीमा तक क्षति पहुंच सकती है, उसके सूचक के रूप में पाटन की सीमा यह दर्शाती है कि जांच अवधि हेतु नामित संबद्ध देश के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक है।

छ.8.9 कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

44. जहाँ तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी सह यह विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव का उद्देश्य कीमतों में उल्लेखनीय मंदी लाना अथवा कीमत में वृद्धि को रोकना था, जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक होती। घरेलू बाजार पर आयातों के प्रभाव के आकलन हेतु निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों का विश्लेषण किया गया। यह पाया गया कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातों का प्रति किलोग्राम पहुंच मूल्य सम्बद्ध उत्पाद की निवल बिक्री कीमत और रक्षति रहित कीमत दोनों से कम था। घरेलू बाजार में कीमतों को प्रभावित करने की सम्भावना वाले कारकों के विश्लेषण के उद्देश्य से घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धी विकल्पों की कीमतों के कारण लागत संरचना में परिवर्तन, यदि कोई हुआ हो, की जांच की गई है। उत्पादन लागत में जांच अवधि के दौरान 2% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि में निवल बिक्री कीमतों में 19% की वृद्धि हुई। प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि सम्बद्ध देशों से आयातित सामग्री के पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत ही कम हैं, जिसके कारण भारतीय बाजार में कीमत कटौती हो रही है। जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती 62-67% की सीमा में और जांच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री 65-70% की सीमा में हुई।

छ. क्षति संबंधी निष्कर्ष

45. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त क्षति मानदण्डों का विश्लेषण यह इंगित करता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में 57% वृद्धि हुई थी। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में 58% बढ़ोत्तरी हुई, जबकि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में केवल 45% की वृद्धि हुई। इसी अवधि में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और यह 2003-04 में 29.35 मी. टन से बढ़कर जांच अवधि में 134.84 मी. टन हो गया, अर्थात् इसमें 359% की वृद्धि हुई। मांग के संदर्भ में संबद्ध देशों से आयात का हिस्सा 2003-04 में 5.25% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 15.33% हो गया जबकि इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मांग का हिस्सा 63.08% से घटकर 58.18% रह गया। वर्ष 2005-06 में लाभप्रदता सकारात्मक हो गई परन्तु जांच अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई। लाभ (पीबीआईटी) तथा नियोजित निवल पूंजी से हुई आय के बारे में भी यही प्रवृत्ति देखी गई।

46. प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि सम्बद्ध देशों से आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और कीमतों पर इनका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जिसकी परिणति कीमत ह्रास और कम कीमत पर बिक्री में हुई है।

47. निर्यातक द्वारा यह तर्क प्रस्तुत किया गया था कि मांग में वृद्धि को देखते हुए घरेलू उद्योग ने सम्बद्ध उत्पादों की क्षमता में वृद्धि कर ली है। तथापि प्राधिकारी भी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की प्रत्याशा में सम्बद्ध उत्पाद की क्षमता में वृद्धि की गई है। निर्यातक ने आगे यह भी तर्क दिया है कि यह प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग का पक्ष लिया जा रहा है और विशेष रूप से इस तथ्य के मद्देनजर योग्यता के तर्कों एवं निवेदनों पर समुचित विचार नहीं किया गया है कि उक्त निर्यातक ने रिकार्ड के सत्यापन हेतु प्रदत्त सहमति वापस ले ली थी। घरेलू उद्योग ने इसका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जो निम्नानुसार है :-

48. प्रकटन विवरण जारी करते समय यह स्पष्ट कर दिया गया था कि हितबद्ध पक्षकार प्रकटन विवरण की प्रति उपलब्ध कराए जाने के पश्चात उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र है तथा आवश्यकता पड़ने पर अंतिम जांच परिणाम में उस पर विचार किया जाएगा। तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन विवरण का उत्तर नहीं दिया है।

49. उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि लाभ, नकद लाभ, निवेश पर आय के संबंध में वर्ष 2003-04 तथा 2005-06 के दौरान घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में सुधार हुआ है जबकि जांच अवधि के पश्चात उसमें गिरावट आई है। इसके अलावा, यद्यपि बिक्री मात्रा के संबंध में कार्य निष्पादन में सुधार हुआ है तथापि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जिसमें इसी अवधि के दौरान आयातों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई थी, जांच अवधि के दौरान बिक्री मात्राओं की वृद्धि दर नकारात्मक थी। जहाँ वर्ष 2005-06 में बाजार वृद्धि में हुई गिरावट अन्य भारतीय उत्पादकों के कारण थी वहीं जांच अवधि में हुई गिरावट जो काफी अधिक थी, वह जांच अवधि में पाटित चीनी आयातों के कारण थी। यह भी पाया गया कि आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन की प्रत्यक्ष लागत से कम है, जिससे यह संकेत मिलता है कि यदि चीनी आयातों को पाटित आयातों पर प्राप्त किया जाता है तो उसके प्रभाव अत्यंत प्रतिकूल होंगे। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

छ.10. कारणात्मक संबंध

50. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारणों के बारे में निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए तथा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अनुसरण में तथा यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के तहत नियम 11 के अनुबंध - 1 के पैरा (v) के अनुसार, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की स्थिति पर सभी ज्ञात कारकों तथा उनके परिणामों के प्रभाव की जांच की है। पाटित आयातों के अलावा ज्ञात कारक, जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति भी पहुँची हो, की भी जांच की गई जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन अन्य कारकों से हुई संभावित क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं थी। संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि (समग्र अर्थात् तथा मांग में हिस्से के संदर्भ में) के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग, बाजार में मांग में वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्री में वृद्धि नहीं कर सका। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग अपनी संयंत्र क्षमता का इष्टतम उपयोग नहीं कर सका, चूंकि जांच अवधि के दौरान उपयोग केवल 83 प्रतिशत था। परिणामतः घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग की वृद्धि को क्षति पहुँची।

51. आयातों के कारण हुई अत्यधिक कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं कर सका। परिणामस्वरूप, वर्ष 2005-06 में सुधार दर्शाने के पश्चात जांच अवधि के दौरान लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय में गिरावट आई है। जहाँ घरेलू उद्योग अपनी कीमतें बढ़ाने में सक्षम हुआ वहीं जांच अवधि में पाटित आयातों के कारण उसके कार्य-निष्पादन में गिरावट आई, जिससे वह उचित कीमत वृद्धि को लागू नहीं कर सका।

52. अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ज. अन्य ज्ञात कारकों की जांच**ज.1 अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा एवं कीमतें**

53. प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य देशों से कोई आयात नहीं हुए हैं अतः वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अन्य देशों से आयातों को क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।

ज.2 मांग में संकुचन तथा/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

54. प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जांच अवधि के दौरान समग्र मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। इसके विपरीत, क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की समग्र मांग में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है। संबद्ध वस्तुओं की कुल मांग में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 57 प्रतिशत की वृद्धि प्रदर्शित हुई है। घरेलू बाजार में उत्पाद की खपत पद्धति में भी कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है, जो प्राधिकारी के अनुसार घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण हैं।

ज.3 विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियाँ तथा उनके बीच प्रतिस्पर्धा

55. प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उद्योग में कोई प्रतिबंधात्मक पद्धति प्रचलित नहीं है इसका कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को माना जा सकता है।

ज.4 प्रौद्योगिकी का विकास

56. याचिकाकर्ता के रिकॉर्डों की जांच के आधार पर, प्राधिकारी का मानना है कि प्रौद्योगिकी में विकास, घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक संगत कारक नहीं रहा है।

ज.5 निर्यात निष्पादन

57. प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया था कि चीनी निर्यातकों द्वारा अन्य बाजारों में भी पाटन करने, जहाँ चीनी उत्पादक न केवल भारतीय उत्पादकों से बल्कि आपस में भी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, के कारण निर्यात मात्राओं में गिरावट आई है। तथापि, प्राधिकारी ने केवल घरेलू प्रचालनों पर विचार किया है और इसलिए संबद्ध देश से पाटित आयातों को, निर्यातों में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति, यदि कोई हुई हो, का कारण माना नहीं जा सकता।

ज.6 घरेलू उद्योग की उत्पादकता

58. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है जो उत्पादन में हुई वृद्धि के कारण है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति उत्पादन में गिरावट के कारण है।

59. कोई अन्य कारक, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना हो, प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है।

झ. कारणात्मक संबंधी निष्कर्ष

60. उपर्युक्त जांच के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तुएं उनके सामान्य मूल्यों, घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत तथा याचिकाकर्ताओं की संबद्ध वस्तु की निवल बिक्री वसूली से कम है, जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। इससे यह संकेत मिलता है कि संबद्ध वस्तुओं के पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध हैं। पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई है। आगे यह भी देखा गया है कि संबद्ध देश से संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में हुई गिरावट के कारण घरेलू उद्योग मांग में वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्रियों में वृद्धि नहीं कर सका। इसके परिणामस्वरूप जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में सीमा तक वृद्धि नहीं हुई कि घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का इष्टतम उपयोग कर सके। परिणामतः घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट के कारण घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग को क्षति हुई है। पाटित आयातों के द्वारा हुई अत्यधिक कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं कर सका। परिणामस्वरूप, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय में गिरावट आई है। अत्यधिक कीमत कटौती तथा पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि के कारण लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय के संदर्भ में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, इन मानदण्डों में वर्ष 2005-06 तक सुधार के पश्चात जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है।

61. अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 तथा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थों के भीतर संबद्ध देश के मूल के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ञ. अंतिम जांच परिणाम

62. उठाए गए मुद्दों, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना तथा किए गए निवेदन तथा हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों के जरिए प्राधिकारी के पास उपलब्ध तथ्यों अथवा अन्यथा उपर्युक्त जांचों के अनुसार तथा पाटन एवं क्षति के वर्तमान विश्लेषण के आधार पर, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं :

i. संबद्ध देश के मूल के आयात पाटित कीमतों पर किए जा रहे हैं तथा उसके कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो रही है।

ii. संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं की कीमतें उनके सामान्य मूल्यों, घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत तथा याचिकाकर्ताओं की संबद्ध वस्तुओं की निवल बिक्री वसूली से कम है तथा उनसे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

iii. संबद्ध देश से संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आने से घरेलू उद्योग मांग में वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्रियों में वृद्धि नहीं कर सका है।

iv. अत्यधिक कीमत कटौती तथा पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि से लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय के संदर्भ में घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

vi. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि (समग्र अर्थों में तथा मांग में हिस्से के संबंध में भी) परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई है।

63. तदनुसार, प्राधिकारी, चीन जन गण के मूल के अथवा वहां से निर्यातित अथवा चीन जन गण के मूल के तथा किसी अन्य तीसरे देश से भारत को निर्यातित, टैरिफ शीर्ष 2942 के तहत आने वाले अथवा किसी अन्य टैरिफ शीर्ष के तहत भारत को आयातित डायक्लोफेनैक सोडियम के आयातों पर 144 रूपए प्रति किग्रा. का निश्चयात्मक षाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

64. केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध, इस सिफारिश के आधार पर की जा सकने वाली कोई अपील, अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 29th May, 2008

FINAL FINDINGS

Subject: Anti-dumping investigations involving imports of Diclofenac Sodium originating in or exported from China.

No. 14/4/2007-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

A. PROCEDURE:

1. The procedure described below has been followed:

i. On 4th June 2007, the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority issued an initiation notification, duly notifying the same in the Gazette of India, initiating an anti dumping investigation with regard to imports of Diclofenac Sodium (hereinafter referred to as DFS) originating in or exported from China PR, (hereinafter referred as subject country). The Anti dumping proceeding was initiated following an application received from M/s. Kairav Chemicals Limited, M/s. Amoli Organics Pvt. Limited and M/s. Aarti Drugs Limited (hereinafter referred as applicants) on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of said product. The application contained evidence of dumping of the said product from the subject countries and material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.

ii. The Authority notified the Embassy of China in India about the receipt of fully documented application made by the applicant before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.

iii. According to sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded copy of the said initiation notification to the known exporters, importers, industry associations, embassy of the subject country and to the applicants and gave them an opportunity to make their views known in writing.

iv. According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of non-confidential version of the application to all the known exporters in subject countries and Embassy of China in India. According to Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and Embassy of China in India. The Embassy of China in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and were requested to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters and producers were also sent to the respective embassies along with the names and addresses of the known exporters.

v. The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from China.

1 Shandong Yibao Biologics Co., Ltd
Xinglong Industrial Garden,
Xinglongzhuang Town
Yanzhou City, Shandong Province.
China

2 Comfortcomms Group Co. Limited
26d, Dushihuayuan, Xinzhou Road,
Futian Dist., Shenzhen, Guangdong,
China

3 Gbb Group Co., Ltd.
Development Zone, Binzhou
Shandong, China

4 Hebei Jiheng(Group) Pharmaceutical Co., Ltd.
368 Jianshe Street Hengshui City Hebei
China,

5 Hebei Veyong Animal Pharmaceutical Co., Ltd.
383 East Heping Road. Shijiazhuang City,
Hebei Province. China

6 Medico (Shijiazhuang) Industries & Trade Co., Ltd.
Room 7G, Block A, City Garden, 159 Xinhua Road,
Shijiazhuang City, Hebei Province.
China

7Shandong Reyoung Pharmaceutical Co., Ltd.

6 Erlangshan Road, Yiyuan County,
Shandong Province. China

8Shandong Yibao Biologics Co., Ltd.

Xinglong Industrial Garden,
Xinglongzhuang Town, Yanzhou City,
Shandong Province. China

9Shanxi Haizheng Scientific Tech. and Trade Co., Ltd

6/F, Building 1, 17 Liu Lane, Yingze
District, Taiyuan City, Shanxi Province.
China

10Skyrun International Group Sunshine Corporation

50 Zhonghua Road, Nanjing, Jiangsu,
China

11The TNN Development Limited

Room 2901, Rainbow Building, 23 Renmin Road,
Zhongshan District, Dalian City, Liaoning Province.
China

12Wuhan Lihua International Trade Corporation

1205B Jiuyun Garden, 34 Jiangnan North Road,
Wuhan City, Hubei Province.
China

13Shenzhen Zhijun Pharmaceutical Co.,Ltd.

Add:Block 5, Bagualing Industrial District
Shenzhen,
P.R.China

vi. Only one of the exporters, M/s. Tangyin Yongqi, responded to the questionnaire in response to the above notification;

vii. A copy of initiation notification along with the importer's questionnaire was also sent to the following known importers and users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4).

1NATCO PHARMA LIMITED

NATCO HOUSE

Road No : 2,Banjara Hills

Hyderabad-500 033

Phone: +91-40-2354 7532

Fax: +91-40-2354 8243, +91-40- 2354 5298

E-mail: natinfo@natcopharma.co.in

2UNIBIOS LABS LTD

5, C-6, Poonam Darshan Poonam Nagar,
Andheri (E)
Mumbai-400093,
Maharashtra, India

3MARKSANS PHARMA LTD

Corporate Office
601-622, 6th Floor,
Chintamani Plaza, Mohan Studio Compound,
Andheri - Kurla Road, Andheri (East).
Mumbai - 400 099.
Tel: + 91 (22) 4001-20-00 (30 lines).
Fax: + 91 (22) 6702-10-04.
Email: info@marksanspharma.com
Web: www.marksanspharma.com

viii. In response to the above notification, none of the importers or users has filed response to the questionnaire in the form and manner prescribed.

ix. The Authority notified Preliminary findings vide Notification no. 14/4/2007-DGAD dated the 28th January, 2008 followed by a corrigendum to the same dated March 12, 2008 and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication.

x. The Central Govt. imposed the provisional duties vide Notification No.46/2008 dated 10.04.2008.

xi. The Authority held a public hearing on 27th March 2008 to hear the interested parties orally, which was attended by the representatives of the domestic industry only. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. Authority in this Finding has considered the written submissions thus received from interested parties. The parties were allowed liberty to file rejoinder submissions on views expressed by other interested parties.

xii. Arguments or submissions were made by only one exporter, M/s. Tangyin Yongqi (other than the domestic industry) before notification of preliminary findings. However, arguments that arose and have been put forth by the domestic industry after the preliminary findings have been dealt while finalising the Findings.

xiii. The Authority kept available non-confidential version of the evidences/submissions presented by interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties.

xiv. **** In this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

xv. In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and no comments were received on the same.

xvi. The investigation of dumping covered the period from 1st January 2006 to 31st December 2006 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2003 to the end of period of investigation. (Also called Injury period)

xvii. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the domestic industry so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

xviii. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation.

xix. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the facts available.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLES.

B.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

2. Following issues were raised by the domestic industry with regard to product under consideration and like article:

- i. Diclofenac Sodium is an organic chemical classified under chapter 29 of the customs Tariff Act under the sub-heading 29420090 as others.
- ii. DFS produced by the domestic industry and imported from China PR are like product.
- iii. DFS is white or slightly yellowish crystalline powder, slightly hygroscopic in nature and sparingly soluble in water.

- iv. There is no difference in Diclofenac sodium produced by the Indian industry and DFS exported from China. Diclofenac sodium produced by the Indian industry and imported from China are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics.
- v. DFS is a non-steroidal anti-inflammatory drug (NSAID) taken to reduce inflammation and an analgesic reducing pain in conditions such as in arthritis or acute injury.
- vi. There is no difference in DFS produced by the domestic industry and imported from subject countries. DFS produced by the domestic industry and imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology (followed by most of the producers world over), functions and uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the two interchangeably. DFS produced by the petitioners and imported from China is like article.

B.2 VIEWS OF THE IMPORTERS, CONSUMERS, EXPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

3. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties filed any comments or submissions with regard to product under consideration, and like articles.

B.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

4. The product under consideration is Diclofenac Sodium, originating in or exported from China PR. DFS is a basic organic chemical, normally classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. DFS is a non-steroidal anti-inflammatory drug (NSAID) taken to reduce inflammation and an analgesic reducing pain in conditions such as in arthritis or acute injury. This product is classified under Customs Tariff heading no. 2942.0090 as per Indian Trade Classification. The Customs and ITC HS classifications are, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.

5. Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules specifies that like articles mean an article, which is identical and alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the articles under examination.

6. The petitioners claimed that the goods produced by them are like articles to the goods originating in or exported from China. No other interested party has raised any objection to the claim of the Domestic Industry on this issue. In view of the above the Authority therefore holds that DFS produced by the domestic industry and that being imported from China as like articles within the meaning of the rules.

C. DOMESTIC INDUSTRY

C.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

7. Following submissions were made by the domestic industry with regard to standing of the domestic industry.

i. The petition was jointly filed by M/s. Kairav Chemicals Limited, M/s. Amoli Organics Pvt. Limited and M/s Aarti Drugs Limited. There is one more producer of DFS in India, M/s. Meditech Chemicals Ltd. M/s. Meditech Chemicals have supported the petition. The petitioners, therefore, constitute domestic industry under Rule 2(b) of the Rules, 1995.

ii. Production of petitioners constitutes a major proportion in Indian Production and therefore petitioners have been treated as “domestic industry” within the meaning of the Rules.

C.2 VIEWS OF THE EXPORTER, IMPORTERS, CONSUMERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

8. The Authority notes that only one of the producers of the subject goods in China, M/s. Tangyin Yongqi, has responded to the Designated Authority.

C.3. EXAMINATION BY THE AUTHORITY

9. The Authority has examined the submissions made by the exporter.

10. The Authority notes that while perusing the response of the exporter, it came to the notice that M/s. Henan Dongtai Pharma Co. Ltd, a related Company of M/s. Tangyin Yongqi, but a separate legal entity, had not furnished a separate response. The Authority also notes that M/s. Henan responded to the MET questionnaire at the behest of the Authority. To that extent the Authority holds that the response of M/s. Henan Dongtai Pharma Co. Ltd was not voluntary.

D. OTHER ISSUES

11. Information available on various individual data sources related to imports of the subject goods from China does not reflect actual volume of imports. However Authority has considered data available in Data Sources IBIS and DGCI&S for the purposes of injury analysis.

D.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

12. The Authority notes that the petitioners have submitted that the preliminary findings show the actual volume of imports known to have been reported as per IBIS. However, in their submissions made post public hearing, the petitioners stated to have analyzed each and every transaction of import statistics provided by DGCI&S and IBIS.

Authority further notes that on comparison of the data received from the two sources, it was found that there are certain entries in DGCIS transaction-wise import data, which are not reflected in transaction-wise IBIS data. The petitioners requested inclusion of these additional import volumes in the import information on record for the purpose of final findings as per following details. Authority, accepting the submissions of the Domestic Industry on this score has considered data available in Data Sources IBIS and DGCIS for the purposes of injury analysis.

Year	Import Volumes in MT as per		
	DGCIS	IBIS	Consolidated
2003-04	5.00	29.35	29.35
2004-05	11.00	51.00	51.00
2005-06	28.50	51.83	58.88
POI	89.75	110.79	134.84

E. Normal Value and Export Price

E.1 China-PR

E.1.1 Normal Value for China-PR

13. The authority notes that only one exporter M/s. Tangyin Yongqi responded to the initiation notification and submitted information. However, the information provided by the exporter was found to be incomplete and unsatisfactory by the Authority for the purpose of claim for grant Market Economy status to the said Chinese producer. Authority found that the response received from the responding producers had a number of missing links with regard to original date of establishment of the company, whether it was transformed from an already existing enterprise, investments, source of finance and other related details, which could not find an appropriate reply to the questions raised by the Authority. The Authority further notes that these missing links were proposed to be examined during the course of verification of the responding exporter, which, of course could not be carried out on account of the withdrawal of consent by the subject exporter. The Authority notes that the so called co-operating exporter at one point of time submitted a consent letter showing their willingness to have the spot verification done by the Authority. However they withdrew the consent at the eleventh hour and a communication was sent to the Authority by their legal representatives in India, M/S Dua Associates, about the inability of the said responding exporter to have the verification got done by the Authority and to that extent the Non-Market economy treatment given by the Authority for determination of preliminary duty has remained un-rebutted. Further the Authority holds to treat the subject exporter as a non-cooperating exporter for the purposes of determination of MET and concludes that the subject exporter is operating under non-market economy conditions at par with all other non-cooperating exporters. Authority has relied upon the facts available as per Rule 6(8) of the Anti-dumping Rules, to determine the normal value. The Authority has constructed

the normal value on the basis of facts available. Normal value has been determined by considering the actual consumption of raw materials of the exporter, who had co-operated earlier and submitted a response to the initiation and on the basis of cost of production of the most efficient petitioner company. By adopting this methodology, the constructed normal value for DFS, as worked out by the Authority, has been calculated as US\$ *** per K.G.

E.1.2. Export price

14. The Authority notes that for preliminary determination Export price in case of responding Chinese company had been adopted on the basis of the claims made by the responding exporter / producer M/s. Tangyin Yongqi. Price adjustments claimed were allowed on account of Inland freight, Commission, bank charges and packing expenses on the CIF transaction and bank charges in respect of FOB transaction for the purpose of preliminary determination by the Authority. However on account of the inability of the Authority to verify the records of the responding exporter, because of the withdrawal of the consent for verification, the Authority treats the subject responding exporter as a non-cooperating exporter and determines only one export price for all the Chinese exporters. The Authority has determined net export price on the basis of lowest of the transactions in terms of CIF, in respect of exports to India by M/s. Tangyin Yongqi as per the information furnished by them in their exporter response and after making necessary adjustments on account of Inland freight, Commission, bank charges and packing expenses on the FOB transaction and 4%VAT refund allowed by the Chinese Government. By adopting the above method, the ex-factory export price has been calculated as US\$ *** per KG.

F. Dumping Margin

15. On the basis of normal values and export prices as determined above, the dumping margins for all exporters from China PR, determined by the Authority are detailed as per table below.

IN US\$(PMT)						
Exporter/Producer From China PR	Normal Value (US\$)	Export. Price (US\$)	Dumping Margin (US\$)	Conversion. Rate	Dumping Margin (INR)	Dumping Margin (%)
All exporters from China	***	***	***	1 US \$ =Rs. 45.67	***	70-75%

16. The dumping margins so determined are significant and above de-minimus-level.

G. INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINKS

G.1. Views of the domestic industry

17. The followings are the views of domestic industry:-

- a) The product was earlier attracting anti dumping duties and therefore the improvement in performance of the domestic industry from 2003-04 to 2005-06 is on account of this imposition of anti dumping duty. The performance has, however, materially deteriorated in the POI.
- b) Export price from the subject countries has remained at dumped level during POI. Further, these prices have not increased proportionate to increase in input prices from base period to POI.
- c) Production, sales volumes and capacity utilization of the domestic industry have shown improvement in response to increase in demand. However, the growth in the POI was lower as a result of increase in imports.
- d) Profit/Loss (PBT, PBIT and PBDIT) of the domestic industry have all shown improvement up to 2005-06 as a result of anti dumping duty being in force. However, the profit declined in the POI with significant increase in dumped volume of imports.
- e) Market share of the domestic industry declined. This is due to the fact that dumped imports have captured significant market share of demand in India.
- f) Imports from the subject country have been undercutting the prices of the domestic industry to a significant degree.
- g) Imports from the subject country have forced the domestic industry to reduce the price steeply during 2005-06 and proposed investigation period. Thus, the imports were suppressing the prices in this period.
- h) Employment levels with the domestic industry have declined in the POI.
- i) Salary & wages: - There is normal increase in salary and wages with the domestic industry.
- j) Demand and market share: - Whereas the market shares of the imports have increased, that of the domestic industry has declined.
- k) Growth:- Growth of the domestic industry in a number of parameters shows negative trend. k
- l) Domestic industry has suffered material injury and is trapped in a vicious cycle of volume effect and price effect. With increase in volume of imports of the subject goods from China into the Indian market as a result of excess capacity with the Foreign Producers, the domestic industry suffered loss of sale and market share. This resulted in adverse volume effect. Loss of sale forced the domestic industry to reduce their domestic selling price in order to sell the subject goods in the domestic market thus resulting in adverse price effect. The exporters further reduced the selling price and as a result, the domestic industry reduced the selling

price further and the process continued. Resultantly, domestic Industry faced adverse volume effect and adverse price effect as a result of unfair trade practices of the exporting countries.

- m) Imports from subject countries are adding to the material injury, already being suffered by the domestic industry.
- n) There is significant increase in the import volumes in absolute terms. This increase in imports is in spite of best efforts of the domestic industry to sell their material even at sub-optimal prices. The increase in imports would have been more, had the domestic industry not made efforts to curtail the same by offering lower prices.
- o) Price undercutting is significant. So significant is the price depressing effect on the domestic industry that should the domestic industry sell the product at prices matching the landed price of imports, it would not be able to recover its production cost (leave aside selling, general & administrative expenses).
- p) Petitioners conducted extensive analysis of capacities with the producers from the subject country and the demand in that country, clearly showing surplus unutilized capacities with the Foreign Producers, which are likely to be offloaded to Indian market at dumped prices.

G.2. Examination by the Authority

G.2.1 Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

18. The Authority collected transaction wise details of imports of subject goods from DGCI&S. The Authority also examined the import data submitted by the petitioners from secondary sources. As per the data, imports from the subject country, after considering imports from both the sources, have increased significantly in absolute terms and in relation to imports in India. Imports from China constitute 100% of the total imports in the country in the POI and 15.33% of the total Indian demand.

G.2.1.1 Import Volumes and share of subject country

Source: IBIS & DGCI&S	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan-Dec'06)
China PR	MT	29.35	51.00	58.88	134.84
Other Countries	MT	0	0	0.31	0

Total Imports	MT	29.35	51.00	59.19	134.84
Trend	Indexed	100	174	202	459

G.2.1.2. Market share in imports

Source: IBIS & DGCI&S	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI(Jan-Dec'06)
Market Share in Imports					
China PR	%	100	100	99.47	100
Trend	Indexed	100	100	99	100
Other Countries	%	0	0	0.53	0
Total	%	100	100	100	100
		***	***	***	***
Production of DI	MT				
Imports from Subject country	MT	29.35	51.00	58.88	134.84
Imports from Subject country as a percentage of production of DI	%	6.07	7.91	6.95	15.22

G.3 Demand, Output and Market shares

G.3.1 Growth In Demand

Source: IBIS & DGCI&S	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Domestic Industry	Mt	***	***	***	***
Other Producers	Mt	***	***	***	***
Total Import	Mt	29.35	51.00	59.19	134.84
Total Demand	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	141	157

19. Demand of subject goods has been determined by the Authority by addition of domestic sales of domestic industry and all imports from all countries. The Authority concludes that demand for the subject goods has grown significantly from base year to POI. It grew by 57% during POI as compared to base year i.e. 2003-04.

20. Authority further concludes that Imports from subject countries show a growing trend in relation to production of the domestic industry. The imports from subject countries was only 6% in relation to the production of the domestic industry in the base year 2003-04, which has gone up in percentage-terms to 15% in POI.

G.4 Capacity, production and capacity utilization of the Domestic Industry

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Plant Capacity	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	126	133	138
Plant Production	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	151	158
Plant Capacity Utilization (%)	%	72.54	64.22	82.88	83.02
Trend	Indexed	100	89	114	114
Production	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	133	175	183

21. The Authority notes that data of domestic industry on capacity, production and capacity utilization reveals that the capacity of the domestic industry for the group as a whole was 1032 MT during 2003-04, which increased to 1428 MT during POI, in anticipation of increase in demand. The production of subject goods was 483 MT during 2003-04 and has increased constantly, in view of rising demand. The trend indicates the production rose by 83% during POI as compared to the base year.

G.4.1. Sales volume of Domestic Industry

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Domestic Industry	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	127	143	145

22. The data on sales indicates that the domestic industry sold *** MT of subject goods during 2003-04 and it increased to *** MT during POI. The Authority notes that the sale of domestic industry has increased by 45% during POI as compared to base year 2003-04. It is further noted that the increase in sales of Domestic Industry is less than increase in demand of the product in the country, particularly in investigation period. Thus, the Authority concludes that, whereas, demand grew by about 16 index points between 2005-06 and POI, sales of the domestic industry grew only by 2% over this period.

G.4.2. Demand and Market Share

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Domestic Industry	Mt	***	***	***	***
Indexed		100	127	143	145
Other Producers	Mt	***	***	***	***

Indexed		100	72	128	132
Total Import	Mt	29.35	51.00	59.19	134.84
Indexed		100	174	202	459
Total Demand	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	141	157
Market share in demand					
Domestic Industry	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	113	101	92
Other Producers	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	64	91	84
Subject Countries	%	5.25	8.16	7.47	15.33
Trend	Indexed	100	155	142	292
Import from Other countries	%	-	-	0.04	-

23. Authority notes that whereas the total demand in India went up by 57% during POI compared to base injury period 2003-04, the market share of imports from China PR increased by a whopping 359% during the same period whereas the share of domestic industry increased by just 45% and that of other domestic producers by 32%. Authority concludes that imports from subject countries have increased significantly in relation to consumption in India.

24. Authority notes that there has been a steady growth in demand of the subject goods. Over the base year 2003-04, the demand in POI was higher by 57%. The share of domestic industry which was at ***% in 2003-04 declined to ***% during POI. During the same period the share of imports from subject countries, which was 5.25% in 2003-04, went up to 15.33% during POI. The Authority therefore concludes that dumped imports have captured significant share in demand.

G.5 Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

25. With regard to the effect of dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18, the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of like product in India or whether effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred to a significant degree.

26. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject countries have been examined by the Authority with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

G.5.1. Evaluation of price over period under consideration

	Unit	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Cost of sales		Rs./Kg	***	***	***	***
Trend		Indexed	100	93	101	102
Selling Price (NSR)		Rs./Kg	***	***	***	***
Trend		Indexed	100	98	121	119

G.6. Price undercutting and underselling effects (POI)

POI	Unit	Jan 06 to Dec 0
Net sales realization	Rs./Kg	***
Landed price - China	Rs./Kg	***
Price undercutting	Rs./Kg	***
Price undercutting (%)	%	62-67%
Non Injurious Price	Rs./Kg	***
Price Underselling	Rs./Kg	***
Price Underselling (%)	%	65-70%

G.6.1. Argument raised by interested parties

27. The responding exporter has claimed that they have exported the product under consideration to India at a profit and above the normal value and thus there is no question of price undercutting by Yongqi. It has been argued that the Authority has not provided any reasons for concluding that the imported subject product from Yongqi has been sold at suppressed prices as this has to be seen in the context of the raw material and costs levels of Yongqi. They further argue that Yongqi has not suppressed the prices of raw materials and other cost involved in manufacturing the subject product and have exported the said product to India above its normal value and at profit.

G.6.2 Examination by the Authority.

28. Authority notes that the Rules require determination of price undercutting for the dumping POI and not over the entire injury period. However, considering the argument, the Authority has determined price undercutting for the previous years as well as per details given below.

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Net Sales Realization	Rs./Kg	***	***	***	***

Trend	Indexed	100	98	121	119
Landed Price - China	Rs./Kg	***	***	***	***
Price undercutting	Rs./Kg	***	***	***	***
Price undercutting (%)	%	31.24	23.22	9.36	62-67%

29. While working out the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

30. Price undercutting has been determined by the Authority by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject country over the entire Injury period, and the landed value for POI based upon the minimum of export price reflected by M/s. Tangyin Yongqi in their response with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% landing charge and applicable basic customs duty to the minimum of export price reflected by M/s. Tangyin Yongqi in their response during POI. The price undercutting from subject country was found to be in the range of 62-67%% during POI.

31. For the purpose of price underselling the landed prices of imports from the subject country determined based upon minimum of export price reflected by M/s. Tangyin Yongqi in their response have been compared with the Non-injurious price of the domestic industry determined for the POI. It shows that underselling was in the range of 65-70%.

32. Further the argument put forth by M/s. Tangyin Yongqi they have not suppressed the prices of raw materials and other cost involved in manufacturing the subject product and have exported the said product to India above its normal value and at profit cannot be relied upon in view of the Authority not being able to verify the records of M/s. Tangyin Yongqi on account of the withdrawal of the consent for verification by the said producer / exporter.

G.7. Price suppression and depression effects of the dumped imports:

33. The price suppression effect of the dumped imports has also been examined by the Authority with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject countries.

34. The Authority notes that analysis of the trend of import prices over the injury period shows that selling price moved in tandem with cost of production between 2003-04 and 2005-06. However, the trend got reversed in the investigation period, when the cost of production increased and selling price declined. Landed price of imports also declined in POI as compared to previous year. The Authority therefore concludes that imports are having adverse effect on the prices in the market.

G.8. Examination of other Injury Parameters

35. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, Authority has examined other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

G.8.1. Profits and actual and potential effects on the cash flow

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Cost of sales	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	93	101	102
Selling Price (NSR)	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	121	119
Profit/Loss	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-55	45	18
Profit/Loss before Tax	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-70	65	27
PBIT	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-71	113	72
Cash Profit	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	70	-65	-27

36. The data indicates that cost of production of the domestic industry went up by 2% during POI as compared to base year against which the selling price increased by 19% during POI. The profit per unit which was negative in the base year and 2004-05 resulted in profits by 22% (indexed) during 2005-06 and declined to 9% (indexed) from base year during POI. The profit of domestic industry on the domestic sales (PBIT) followed the same trend. The Authority concludes that, whereas the situation of the domestic industry was improving during 2005-06 and POI, the same can be attributed to increase in per unit selling price.

G.8.2 Return on investment and ability to raise capital

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
PBIT	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-71	113	72
Net Fixed Assets	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	172	175	142
Working Capital	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	110	131	109
Capital Employed - NFA	Rs./Lacs	***	***	***	***

Trend	Indexed	100	146	157	128
Return on Capital Employed (NFA Basis)	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-48	72	56

37. The Authority notes that capital employed increased by 46% in 2004-05, 57% in 2005-06 and 28% during POI as compared to base year. The return on capital employed was negative in the base year and 2004-05; became positive 72% in 2005-06 and declined to 56% during POI. It is thus found that whereas the situation of the domestic industry showed improvement in 2005-06, the same deteriorated in POI.

G.8.3. Productivity

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Productivity per employee	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	124	164	175

38. The Authority notes that data on production per employee shows that the productivity increased by 75% during POI as compared to base year.

G.8.4. Employment and wages

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Employment (Manpower strength)	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	107	107	105
Wages	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	109	123	150

39. The Authority notes that the employment level does not show significant change. In indexed form it increased to 105% during POI as compared to base year. The wages increased by 50% during POI as compared to base year.

G.8.5 Inventories

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Opening Stock	KG	***	***	***	***
Closing Stock	KG	***	***	***	***
Average Stock	KG	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	149	107	38
Average Stock in terms of No. of Days' sales	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	131	78	27

40. The Authority notes that trends in the average inventory show that average inventory declined from 100 in the base year to 38 during POI. The Authority notes that the stock was equivalent to ***days of sales in 2003-04 and declined to equivalent of ***days during Period of Investigation.

G.8.6. Growth

41. The growth in demand shows positive trend from base year to POI on year to year basis. The growth in production and sales also show positive trend throughout the POI. The cost of production and selling price declined in 2004-05 and then increased in 2005-06 and in POI. Growth of profits shows positive trend up to 2005-06 and decline in POI.

G.8.7. Investment

42. The authority notes that the domestic industry has enhanced the capacity of subject goods from base year to Period of Investigation in view of rising demand and in anticipation of increase in sales as a result of imposition of anti-dumping duty on the dumped imports from the subject country.

G.8.8. Magnitude of Dumping

43. The Authority concludes that the magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margins determined against the subject country named, for the POI, are significant.

G.8.9. Factors affecting prices

44. With regard to the effect of dumped imports on prices, the Authority is required to consider whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred to a significant degree. In order to assess the effect of imports on the domestic market, the Designated Authority analyzed import prices over the injury period. It was found that the landed value per KG of imports from the subject country in POI was lower than both the net selling price and non-injurious price of the subject product. Change in cost structure if any, due to competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors that might be affecting the prices in the domestic market. The cost of production has increased by 2% during POI. The net selling prices increased by 19% during the same period. The Authority concludes that Landed values of imported material from subject countries are significantly below the selling price of the domestic industry, causing price undercutting in the Indian market. The undercutting during POI was in the range of 62-67% and underselling was in the range of 65-70% during POI.

G.9. Conclusion on injury

45. The examination of above injury parameters by the Authority indicates that growth in demand was 57% during POI as compared to base year. The production of the domestic industry increased by 58% during POI as compared to the base year whereas the sales of the domestic industry increased only by 45% during POI as compared to the base year. During the same period, the imports of subject goods from subject countries increased significantly from 29.35 MT in 2003-04 to 134.84 MT during POI i.e. it increased by 359%. The share of the imports from subject countries in relation to demand increased from 5.25% in 2003-04 to 15.33% during POI whereas the share in demand of the domestic industry declined from 63.08% to 58.18% during the same period. The profitability became positive in 2005-06 but declined during POI. Similar trend is observed in case of profits (PBIT) and return on net capital employed.

46. The Authority concludes that Imports from subject countries have increased significantly and these had significant adverse price effect resulting in price suppression and price undercutting.

47. It was argued by the exporter that the domestic industry has enhanced capacity of the subject product in view of rising demand. However, the Authority at the same time also presumes that the capacity of the subject product has been enhanced in anticipation of imposition of anti dumping duty. The exporter has further argued that it is apparent that there is strong presumption in favour of the domestic industry and the contentions and submissions of Yongqi have not been duly considered, particularly in view of the fact that the said exporter withdrew the consent for verification of their records. Domestic Industry has provided a detailed analysis and the same are elaborated below.

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Plant Capacity	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	126	133	138
Plant Production	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	112	151	158
Plant Capacity Utilization (%)	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	89	114	114
Production	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	133	175	183
Domestic Sales	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	127	143	145
Cost of production	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	93	101	102
Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	121	119

Profit/Loss	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-55	45	18
Profit/Loss	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-70	65	27
PBIT	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-71	113	72
Cash profit	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	1	514	415
ROCE	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	-48	72	56
Productivity per employee	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	124	164	175
Import from subject countries	Mt	29.35	51.00	58.88	134.84
Trend	Indexed	100	174	201	459
Import from other countries	Mt	0	0	0.31	0
Total Import	Mt	29.35	51.00	59.19	134.84
Trend	Indexed	100	174	202	459
Sales of domestic industry	Mt	***	***	***	***
Sales of other producers	Mt	***	***	***	***
Total demand	Mt	558.89	624.98	788.012	879.48
Trend	Indexed	100	112	141	157
Market share in demand					
Domestic industry	%	***	***	***	***
Other producers	%	***	***	***	***
Subject countries	%	5.25	8.16	7.47	15.33
Other countries	%	-	-	0.04	-

48. While issuing the disclosure statement it was made clear that the interested parties are free to respond to the same after the copy of the disclosure statement is made available to them and the same shall be taken care of in the final findings in case need arises. However the Authority notes that none of the interested parties, except the domestic industry responded to the disclosure statement. In their response domestic industry has re-iterated the stand taken by them in the form of submissions made at the conclusion of public hearing and the same have already been considered. Submissions with regard to injury determination have also been considered in these final findings.

49. On the basis of above analysis, the Authority concludes that the performance of the domestic industry improved between 2003-04 and 2005-06 in respect of profits, cash profits, return on investments, but deteriorated thereafter in the POI. Further, even though performance with regard to sales volumes improved, the rate of growth of sales volumes was negative in investigation period as compared to preceding year with significant

increase in imports in this period. Market share of the domestic industry improved till 2004-05 and declined significantly thereafter. While decline in market share in 2005-06 was due to other Indian Producers, the decline, which was more pronounced in POI, was due to dumped Chinese imports in POI. It is also found that the landed price of imports is below the direct cost of production of the domestic industry, thus indicating significant adverse impact in case Chinese imports are allowed at dumping prices. It is thus concluded that the domestic industry has suffered material injury.

G.10. Causal Link

50. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by domestic industry and in accordance with article 3.5 of Agreement on Anti-Dumping and as per Para (v) of Annexure-II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation of the domestic industry. Known factors other than dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports. The significant increase in volume of dumped imports from the subject country (both in absolute terms as well as in relation to the share in demand) has resulted in significant decline in market share of the domestic industry. Decline in market share of domestic industry as a consequence of increase in market share of subject country prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate to increase in demand in the market. As a result, domestic industry could not optimally utilize its plant capacity, as the utilization during POI was only 83%. Consequently growth in production, sales and capacity utilization of the domestic industry suffered as a result of the decline in market share of domestic industry.

51. Significant price undercutting caused by imports prevented the domestic industry from increasing its prices. Consequently, profits, cash flow and return on investment deteriorated during POI after showing improvement in 2005-06. While domestic industry was able to increase prices, its performance deteriorated in the POI due to dumped imports, which prevented it from effecting legitimate price increases.

52. The Authority therefore concludes that the imports from the subject country have caused material injury to the domestic industry.

H. Examination of Other Known Factors

H.1. Volume and prices of imports from other sources

53. The Authority notes that there are no imports from other countries and therefore concludes that the injury cannot be attributed to imports from other countries.

H.2. Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

54. The Authority concludes that there is no contraction in the overall demand during POI. On the contrary; overall demand for subject goods has shown positive growth during the injury period. The total demand of subject goods has shown growth of 57% during Period of Investigation as compared to the base year. There is also no significant change in consumption pattern of the product in the domestic market, which the Authority attributes to the injury to the domestic industry.

H.3. Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

55. The Authority concludes that there is no restricted practice prevalent in the industry, which could be attributed to the injury to the domestic industry.

H.4. Development of technology

56. On the basis of examination of the records of the petitioner, the Authority holds that development in technology has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

H.5. Export performance

57. The Authority concludes that the export volume of the domestic industry has declined during the POI. Petitioner alleged that decline in export volumes was due to Chinese producers resorting to dumping in other market as well, where the Chinese producers are competing not only with the Indian Producers, but also amongst themselves. However, the Authority has considered only domestic operations and therefore, injury, if any, caused to the domestic industry due to decline in exports has not been attributed to dumped imports from subject country.

H.6. Productivity of the Domestic Industry

58. Productivity of the domestic industry has increased which is a result of increase in production. It cannot, thus be said that the injury to the domestic industry has been caused by decline in production.

59. No other factor which could have possibly caused injury to the domestic industry has been brought to the knowledge of Authority.

I. Conclusion On Causation

60. On the basis of the above examination it is concluded that the subject goods exported from the subject countries are at prices below their normal values, Non Injurious Price of the domestic industry and the net sales realization of the subject goods of the applicants, and have caused injury to the domestic industry indicating causal links between dumping of subject goods and injury to the domestic industry. Significant increase in the volume of dumped imports has resulted in significant decline in the market share of domestic industry. It is further seen that decline in market share of domestic industry as a consequence of increase in market share of subject imports from the subject country prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate to growth in demand. As a result, sales of domestic industry during POI did not increase to such an extent that domestic industry could have optimally utilized its capacity. Consequently, production, sales and capacity utilization of the domestic industry suffered as a result of the decline in the market share of the domestic industry. Significant price undercutting caused by dumped imports prevented the domestic industry from increasing its prices. Resultantly, profit, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated in the POI. Significant price-undercutting and substantial increase in the volume of dumped imports adversely affected the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, and return on investment, these parameters deteriorated in POI after improving till 2005-06.

61. The Authority, therefore, concludes that the dumped imports originating in the subject country have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti-dumping Rules and article 3.5 of Agreement of Anti-dumping.

J. FINAL FINDINGS:

62. Having regard to the issues raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current dumping and injury, the Authority concludes that:

- i. Imports originating in the subject country are taking place at dumped prices and the same have caused material injury to the domestic industry
- ii. Subject goods exported from the subject countries are at prices below their normal values, Non Injurious Price of the domestic industry and the net sales realization of the subject goods of the applicants, and have caused injury to the domestic industry
- iii. Decline in market share of domestic industry as a consequence of increase in market share of subject imports from the subject country prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate to growth in demand
- iv. Significant price-undercutting and substantial increase in the volume of dumped imports adversely affected the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, and return on investment.
- v. Significant increase in volume of dumped imports from the subject country (both in absolute terms as well as in relation to the share in demand) has resulted in significant decline in market share of the domestic industry

63. Accordingly, the Authority recommends definitive anti dumping duty of Rs. 144/- per K.G on imports of Diclofenac Sodium, falling under Tariff Heading 2942 or imported into India under any other Tariff Heading, originating in or exported from China PR or originating in China PR and exported to India from any third Country.

64. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority